## कक्षा : दसवीं- जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध ( परीक्षा 23 जुलाई, 2023 )

### उत्तरतालिका

**प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :-** **15x1 = (15)**

(a) सीमा की रक्षा वाले देव कहलाते हैं-
(क) अनीक (ख) लोकपाल
(ग) प्रकीर्णक (घ) पारिषद्य ( ख )

(b) शिल्प आर्य नहीं हैं-
(क) जुलाहा (ख) नाई
(ग) किसान (घ) कुम्हार ( ग )

(c) पृथ्वीकाय में उत्पन्न हुआ जीव अधिक से अधिक रहता है-
(क) संख्यात काल (ख) असंख्यात काल
(ग) अनन्त काल (घ) संख्यात वर्ष ( ख )

(d) उत्तम धर्म का श्रवण मिलने पर भी उस पर होना दुर्लभ है-
(क) पराक्रम (ख) श्रद्धा
(ग) कीर्ति (घ) प्रसिद्धि ( ख )

(e) उत्तराध्ययन सूत्र के दशम अध्ययन का नाम है-
(क) विनय (ख) दुर्लभ
(ग) द्रुम पत्रक (घ) असंस्कृत ( ग )

(f) पौषध का प्रकार नहीं हैं-
(क) आहार (ख) शरीर
(ग) इन्द्रिय (घ) ब्रह्मचर्य ( ग )

(g) दशाश्रुत स्कन्ध की कौनसी दशा में निदान का स्वरूप बताया है-
(क) सातवीं (ख) दूसरी
(ग) पाँचवीं (घ) नवीं ( घ )

(h) अल्पायु बंध का प्रमाण आगम में है-
(क) भगवती सूत्र (ख) उत्तराध्ययन सूत्र
(ग) सुखविपाक सूत्र (घ) नन्दीसूत्र ( क )

(i) अनेकान्त का फलित यह है कि इससे होता है-
(क) प्रमाद (ख) भाग्य
(ग) सम्यग्ज्ञान (घ) चारित्र ( ग )

(j) आत्मा का लक्षण नहीं हैं-
(क) सुख (ख) वीर्य
(ग) कर्त्ता (घ) विध्वंसन ( घ )

(k) जघन्य चक्षुदर्शन वाले मनुष्य में उपयोग संभव है-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 8 (घ) 6 ( घ )

(l) जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 8 (ख) 4
(ग) 9 (घ) 3 ( ख )

(m) जघन्य गुण पीले वर्ण वाले बेइन्द्रिय की तुलना करने पर स्थिति होती है-
(क) त्रिस्थान पतित (ख) चतुःस्थान पतित
(ग) द्विस्थान पतित (घ) एक स्थान पतित ( क )

(n) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों में युगलिकों की अवगाहना है-
(क) 1000 योजन झाझेरी (ख) एक गाउ
(ग) 4 योजन (घ) 3 गाउ ( घ )

(o) प्राकृत भाषा का प्रकार नहीं हैं-
(क) सौरसेनी (ख) मागधी
(ग) पाली (घ) राजस्थानी ( घ )

**प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :-** **15x1=(15)**

(a) गुण द्रव्य में सदैव रहने के कारण से सहभावी कहलाते हैं। ( हाँ )

(b) प्रदेशों के समूह को अस्तिकाय कहते हैं। ( हाँ )

(c) सभी प्रकार के पुद्गल रूपी ही होते हैं। ( हाँ )

(d) कर्त्ता के अनुसार ही कर्म का वचन होता है। ( नहीं )

(e) चन्द्र विकासी कमल पानी से लिप्त नहीं होता है। ( हाँ )

(f) सिद्धिलोक को प्राप्त करने के लिए क्षपक श्रेणि पर आरूढ़ होना होता है। ( हाँ )

(g) साठ वर्ष की अवस्था वाला मुनि पर्याय स्थविर कहलाता है। ( नहीं )

(h) आत्मा का स्वभाव निःसंग, निष्कलंक, निर्मल और नीरज है। ( हाँ )

(i) एक पर्याय से दूसरी पर्याय में जाने वाला द्रव्य कहलाता है। ( हाँ )

(j) वस्तुओं और विषयों के प्रति जो ममत्त्व है, आसक्ति है, वह लोभ है। ( नहीं )

(k) युगलिकों में उत्कृष्ट उपयोग नहीं पाया जाता है। ( हाँ )

(l) उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रियों में 6 उपयोग होते हैं। ( नहीं )

(m) जघन्य अवगाहना बाटा बहता जीव में मानी जाती है। ( नहीं )

(n) अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले एकान्त मिथ्यादृष्टि होते हैं। ( हाँ )

(o) असंख्यात की गणना में चउट्ठाण तक स्थान बन सकते हैं। ( हाँ )

**प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:-** **15x1=(15)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (a) | खिव | (क) घर | फेंकना |
| (b) | वय | (ख) पत्नी | बोलना |
| (c) | कव्व | (ग) गिरना | काव्य |
| (d) | गिह | (घ) जल्दी कर | घर |
| (e) | पड | (च) सुनकर | गिरना |
| (f) | विसूईया | (छ) आरूढ़ होकर | हैजा |
| (g) | गंडं | (ज) फेंकना | फोड़ा |
| (h) | भारियं | (झ) थोड़ी देर | पत्नी |
| (i) | नेयाउए | (य) झाड़ दे | न्याय पूर्ण |
| (j) | अभितुर | (य) काव्य | जल्दी कर |
| (k) | निसम्म | (ल) छोड़कर | सुनकर |
| (l) | उस्सिया | (व) हैजा | आरूढ़ होकर |
| (m) | अवउज्झिय | (क्ष) न्याय पूर्ण | छोड़कर |
| (n) | थोवं | (त्र) फोड़ा | थोड़ी देर |
| (o) | विहुणाहि | (ज्ञ) बोलना | झाड़ दे |

**प्र.4 मुझे पहचानो :-** **15x1 = (15)**

(a) मैं ठोस वायु रूप हूँ। — घनवात

(b) मैं अधर्मजन्य वेदना भी कही जाती हूँ। — देवकृत

(c) मुझमें 3 लाख नरकावास हैं। — पाँचवीं नारकी में

(d) मैं मंत्री या पुरोहित का कार्य करने वाला देव हूँ। — त्रायस्त्रिंश

(e) मैं क्षेम, शिव और अनुत्तर हूँ। — सिद्धि लोक

(f) मेरी अधिकता वाला जीव कर्मों के कारण जन्म-मरण रूप संसार में परिभ्रमण करता है। — प्रमाद

(g) मुझमें उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्टतः अनन्त काल तक रहता है। — वनस्पतिकाय

(h) मेरा छेदन करके श्री गौत्तम स्वामी सिद्धि गति को प्राप्त हुए। — राग और द्वेष

(i) मैं माध्यमिका नाम की नगरी का राजा था। — मेघरथ

(j) मैं ही सुख-दुःख का जनक हूँ और मैं ही उनका विनाशक हूँ। — आत्मा

(k) मैं जैन दर्शन की आधार शिला हूँ। — अनेकान्त

(l) मेरी सिद्धि अपरिग्रह से ही हो सकती है। — अहिंसा

(m) मेरे उत्कृष्ट प्राप्त होने पर अन्तर्मुहूर्त्त में केवलज्ञान होने की नियमा है। — अवधिज्ञान/परमावधिज्ञान

(n) केवलज्ञानी मनुष्य की अवगाहना मेरी अपेक्षा से चतुःस्थानपतित नहीं है। — बोनस अंक

(o) मेरी कायस्थिति 1000 सागर झाझेरी कही गई है। — चक्षुदर्शन/पंचेन्द्रिय

**प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-** **8x2 = (16)**

(a) परत्व और अपरत्व का अर्थ लिखिए।

उ. परत्व का अर्थ- ज्येष्ठता, बडापन अथवा प्रमुखता है, जबकि अपरत्व का अर्थ- कनिष्ठता, छोटापन अथवा गौणता है।

(b) पाँच अनुत्तर विमान के देवों में किस प्रकार विषय सुख सेवन होता है ?

उ. ये देव शांत और विषयसुख सेवन से उपरत रहते हैं। उन्हें देवियों के स्पर्श आदि से कामसुख भोगने की इच्छा ही नहीं होती है। वे नीचे के देवों से अधिक सन्तुष्ट एवं सुखी होते हैं।

(c) पाँच अनुत्तर विमान के देवों की कोई एक विशेषता लिखिए।

उ. पाँच अनुत्तर विमान में से विजय, वैजयन्त, जयंत और अपराजित के देव अधिक से अधिक दो बार मनुष्य जन्म धारण करके मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव च्युत होने के बाद केवल एक बार मनुष्य धर्म धारण कर मोक्ष प्राप्त करते हैं। अनुत्तर विमान के अलावा किसी भी देव के लिए ऐसा नियम नहीं है।

(d) गौतम स्वामी को पछताना ना पड़े, इसके लिए क्या उपदेश भगवान ने दिया ?

उ. जैसे कमजोर भारवाहक (मजदूर) विषममार्ग पर जाता है, तो बाद में पछताता है, वैसे ही हे गौतम! तुम भी विषममार्ग में मत चले जाना, अन्यथा तुम्हें भी बाद में पछताना होगा।

(e) गौतम स्वामी को किसकी दूसरी बार गवैषणा करने का मना किया ?

उ. मित्र, बान्धव और विपुल-संचित स्वर्णादि धनराशि का त्याग करके फिर से उनकी गवेषणा (तलाश) मत कर।

(f) दुक्करं करेइ और दुल्लहं लहइ का अर्थ लिखिए।

उ. दुक्करं करेइ- अपूर्वकरण के द्वारा ग्रन्थि-भेद करता है।
दुल्लहं लहइ- अनिवृत्तिकरण को प्राप्त करता है।

(g) जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की आपस में तुलना कीजिए।

उ. जघन्य अवगाहना वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है प्रदेश की अपेक्षा तुल्य, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा और छह उपयोग ( दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(h) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य की आपस में तुलना कीजिए।

उ. उत्कृष्ट अवगाहना वाला मनुष्य उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य, स्थिति की अपेक्षा एकस्थानपतित, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा 6 उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) नित्यत्व और अवस्थितत्त्व में क्या अन्तर है ?

उ. अपने स्वरूप को नहीं छोड़ना नित्यत्व कहलाता है, जबकि पराये स्वरूप को प्राप्त नहीं करना अवस्थितत्व कहलाता है। नित्यत्व से जगत् की शाश्वतता तथा अवस्थितत्व से एक-दूसरे के स्वरूप को प्राप्त नहीं करना, प्रकट होता है।

(b) आकाश द्रव्य को अवगाहन गुण वाला क्यों कहाँ है ?

उ. क्योंकि यही एक ऐसा द्रव्य है जिससे सभी द्रव्यों को अपने भीतर समाहित करने की, अवगाहन करने की शक्ति है। यह अरूपी द्रव्य होते हुए भी रूपी-अरूपी सभी द्रव्यों को जगह देता है। आकाश स्वयं अपने आप पर ही स्थित रह जाता है, उसे किसी दूसरे सहारे की आवश्यकता ही नहीं है।

(c) परमाणु भेद से ही क्यों बनता है ?

उ. क्योंकि परमाणु सूक्ष्म, अविभाज्य एवं स्वतन्त्र पुद्गल है, ऐसी अवस्था स्कन्ध के टूटने, अलग होने पर ही बन पाती है, स्कन्ध रूप में रहने पर नहीं। इस कारण से परमाणु की उत्पत्ति स्कन्ध के भेद (टूटने) से ही बनती है।

(d) अवउज्झिय मित्तबंधवं, विउलं चेव धणोह संचयं।

उ. मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम !मा पमायए।। गाथा का भावार्थ लिखिए।
मित्र,बान्धव और विपुल-संचित स्वर्णादि धनराशि का त्याग करके फिर से उनकी गवेषणा (तलाश) मत कर। हे गौतम! तू समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

(e) सुपात्रदान का फल प्रमाण सहित लिखिए।

उ. भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशक 6 में स्पष्ट वर्णन है कि ''तथारूप श्रमण-माहण को प्रासुक एषणीय आहार बहराते हुए श्रमणोपासक (दाता) एकान्त निर्जरा का लाभ प्राप्त करता है। किंचित् भी पाप-कर्म का बंध नहीं करता।
शतक 7 उद्देशक 1 में कहा है कि सन्तों को निर्दोष आहार बहराते हुए साधक स्वयं भी समाधि प्राप्त करता है तथा श्रमण-निर्ग्रन्थों को भी समाधि प्रदान करता है।

(f) संथारा मरण और आत्महत्या में कोई दो अन्तर लिखिए।

— नोटः- इनमें से कोई दो मान्य-

| संथारा | आत्म-हत्या |
|---|---|
| समभाव व विवेकपूर्वक ग्रहण किया जाता है, जिससे आत्मबल बढ़ जाता है। | यह अज्ञान व मोह से ग्रसित विषम भावों में की जाती है, जिससे आत्मबल क्षीण हो जाता है। |
| देह का यथासमय घात होता है, पर आत्मघात नहीं होता। | देहघात के साथ आत्मघात (आत्मा की दुर्गति)भी होती है। |
| यह दण्डनीय कार्य नही हैं। इसमें साधक शुद्ध और शुभ भावों में देह छोड़ता है। | यह दण्डनीय अपराध है। इसमें जीव अशुभ भावों में देह छोड़ता है। |
| यह प्रकट रूप से देवगुरु धर्म की साक्षी से, बड़ों की आज्ञा से, सबके समक्ष विधिपूर्वक ग्रहण किया जाता है। | यह छिपकर विवशता से किसी भी तरह कर ली जाती है |
| यह सद्गति का कारण है। | यह दुर्गति का कारण है। |
| इसमें सबके प्रति क्षमा व मैत्री भाव होता है। | इसमें किसी न किसी के प्रति मरने वाले का आक्रोश होता है। |
| आयुष्य का अन्त निकट जानकर जीवन की अंतिम घड़ियों में यह निर्मल भावों से ग्रहण किया जाता है। | यह कभी, किसी भी दशा में समस्याओं से घिरा हुआ, कलह में प्रवृत्त, आवेश आने पर कर ली जाती है। |

(g) जीव पज्जवा में सभी जीवों में द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा तुल्य कहने का कारण लिखिए।

उ. द्रव्य से तात्पर्य जीवों की गिनती से है। जिनकी आपस में तुलना की जा रही है। अर्थात् जिस जीव की, दूसरे जिस जीव से तुलना की जा रही है, वे दोनों संख्या में एक-एक ही है, अतः द्रव्य से तुल्य कहा गया है।

प्रदेश से तुल्य बतलाने का कारण यह है कि सभी जीवों के आत्म-प्रदेशों की संख्या बराबर ही होती है। अर्थात् सभी जीवों के आत्म-प्रदेश असंख्यात ही होते हैं। यद्यपि असंख्यात के असंख्यात भेद भी होते हैं, किन्तु आत्म-प्रदेशों की संख्या में एक प्रदेश का भी अन्तर नहीं होता, संख्या में एक समान ही होते हैं। जिस जीव की दूसरे जीव से तुलना की जा रही है, उन दोनों जीवों के आत्म-प्रदेश एक समान (तुल्य) ही होते हैं।

(h) ' पा ' धातु के वर्तमान काल के तीनों पुरूष और दोनों वचनों के रूप लिखिए।

उ.

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथम | पाइ | पान्ति, पान्ते, पाइरे |
| मध्यम | पासि | पाह, पाहित्था |
| उत्तम | पामि | पामो, पामु, पाम |